अध्याय द्वितीय
एलोरा की लयण स्थापत्य तथा मूर्तियां

सामान्य

एलोरा की गुफाएँ अजन्ता के समान ही शैलकृत हैं और इनकी समग्र रचना तथा मूर्तिकारी पहाड़ों के भीतरी भाग को काट कर निर्मित है।[1] प्रस्तुत अध्याय में एलोरा के लयण–स्थापत्य, मूर्तियों एवं उनके तिथिक्रम की सामान्य विवेचना की गयी है। साथ ही आवश्यकतानुसार बौद्ध एवं जैन गुफाओं की भी चर्चा की गयी है। एलोरा के लयण–वास्तु तकनीकी दृष्टि से पश्चिम भारत के कार्ला, भाजा, नासिक, अजन्ता आदि की परम्परा में आते हैं। इसी कारण एलोरा के आरम्भिक वास्तु पर बौद्ध वास्तुकला का विशेष प्रभाव देखा जा सकता है।

एलोरा में वास्तु एवं शिल्प, दोनो ही दृष्टियों से लगभग सातवीं से नवीं शती ई० का मध्य का काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण था। सातवीं–आठवीं शती ई० में एलोरा में चालुक्यों ने भी कुछ मन्दिरों का निर्माण करवाया। ये मन्दिर एकाकी शिलाओं को काट कर बनाए गए। अग्रकक्ष, नन्दीकक्ष तथा सामने के बरामदे एवं प्रतिमागृह वाले हाल से युक्त इन मन्दिरों की योजना उस समय बनाए जा रहे ईटों एवं पत्थरों के मन्दिरों की

नकल पर है[२]। एलोरा के शैल–निर्मित जैन मन्दिर नवीं शती ई० और उसके बाद बने इनमें इन्द्रसभा समूह सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिसका आलंकारिक विवरण एवं उकेरन कलात्मक स्तर पर ब्राहमण गुफाओं के समान है।

एलोरा की बौद्ध गुफाओं (सं० १ से १२) में एक चैत्य (गुफा संख्या १०) है[३] तथा अन्य सभी विहार हैं। एलोरा की गुफा संख्या ११ तथा १२ दोनों ही तीन तलों में विभक्त है जिन्हें क्रमशः दो थाल एवं तीन थाल भी कहते हैं। एलोरा के बौद्ध लयणों को कालक्रमानुसार तीन भागों में बाँट सकते हैं। **प्रथम भाग** में गुफा संख्या एक, दो, तीन तथा पाँच है जिनका समय लगभग चौथी शती ई० है। गुफा संख्या चार एवं छह से दस तक छठी और सातवीं शती ई० के तथा गुफा संख्या ग्यारह और बारह, जो बहुत अनोखी है, सातवीं शती ई० की है।[४] इन बौद्ध गुफाओं में आदि बुद्ध, पाँच ध्यानी बुद्धों एवं उनके बोधिसत्वों की परम्परा को मूर्त रूप में व्यक्त किया गया है। इनमें मानुषी बुद्धों की भी मूर्तियां हैं। बी० भट्टाचार्य का मत है कि एलोरा की बौद्ध गुफाओं में मंजुश्री, तारा, खसर्पण, जम्भल, प्रज्ञापारमिता आदि देवताओं का अंकन नहीं हुआ है[५]। किन्तु वस्तुतः तारा, मंजुश्री आदि कई तांत्रिक देवी–देवताओं की मूर्तियां इनमें विद्यमान है, यह दूसरी बात है कि संख्या की दृष्टि से ये मूर्तियां नगण्य हैं और बंगाल की भाँति बौद्ध ग्रन्थ साधनमाला के आधार पर पूर्ण विकास भी नहीं दर्शातीं। वास्तु योजना की दृष्टि से एलोरा की बौद्ध गुफाएँ अजन्ता की कई लेखयुक्त गुहाओं से मिलती–जुलती हैं।[६] एलोरा के बौद्ध–विहारों का क्रमशः ब्राह्मण गुफाओं में स्पष्ट विकास दृष्टिगत होता है। एक से लेकर पाँच तक की लयण गुहाओं का स्थानीय नाम धीरवाड़ा (या महाखाड़ा या धेढ़वाड़ा) है। छह बारह तक की गुफाओं में चैत्य एवं विहारों का रूप अत्यन्त विकसित है। एलोरा के बौद्ध बिहार विन्यास–योजना की विकसित अवस्था के उदाहरण हैं[७] जिसे मुख्यतः एलोरा की पाँचवीं, ग्यारहवीं एवं बारहवीं गुफाओं की अलंकरण–सज्जा में देखा जा सकता है। एलोरा की ग्यारहवीं तथा बारहवीं गुफाएँ तीन मंजिलों से युक्त हैं और इनके सामने एक ही शिला में उत्कीर्ण खुला हुआ दालान है। गुफा सं. १० का आमुख दो तलों में है जिसके मध्य में भव्य अर्द्ध–चन्द्राकार रोशनदार है।[८] इसके दोनों ओर उत्कीर्ण फलक

तत्कालीन कला का परिचायक है।

इस गुफा का अन्तराल गजपृष्ठ आकृति का है तथा स्तूप में एक भव्य बुद्ध प्रतिमा प्रलम्बपाद स्थिति में व्याख्यान मुद्रा में बैठी हैं। यह शैली अजन्ता से यहाँ आयी है।[६] दो थाल एवं तीन थाल गुफाएं ऊपरी मंजिल में लम्बाई की दिशा में वीथिकाओं में विभक्त है जिसके किनारों या आलों में बुद्ध की प्रतिमाएं उत्कीर्ण है। पूर्व कक्ष में मुकुटधारी द्वारपालों की दो विशाल मूर्तियाँ हैं और पिछली दीवार पर छह देवियां आमूर्तित हैं। प्रतिमागृह में बुद्ध की विशाल प्रतिमाओं के अतिरिक्त पद्मपाणि, वज्रपाणि एवं अन्य बोधिसत्व भी निरूपित है। एलोरा में बौद्ध लयण– वास्तुशैली का सर्वोच्च विकास मिलता है और साथ ही मूर्ति शिल्प में कलात्मक उत्कृष्टता की जो परम्परा गुप्त काल से चली आ रही थी, उसका भी अन्यतम् उत्कर्ष देखा जा सकता है। कुमारास्वामी के मत से भारत में सर्वोत्कृष्ट मूर्ति शिल्प की रचना एलोरा में ही हुई है।[१०]

संख्या ३० से ३४ की गुफाएँ जैन धर्म से सम्बन्धित है। गुफा संख्या ३० का स्थानीय नाम छोटा कैलास मन्दिर, गुफा संख्या ३२ का इन्द्र सभा एवं गुफा संख्या ३३ का जगन्नाथ सभा है। एलोरा के जैन लयण लयणशिल्प के अन्तिम काल के हैं।[११] जैन गुफाएं ब्राह्मण गुफाओं के अनुरूप हैं। केवल प्रतिमाओं के आधार पर ही इनमें अन्तर देखा जा सकता है। इन्द्रसभा तथा जगन्नाथ सभा दो मंजिलें हैं।[१२] एलोरा की जैन गुफाओं में जैनों के सर्वोच्च आराध्य देव तीर्थंकरों (या जिनों) की अनेक मूर्तियां हैं। २४ जिनों में से केवल आदिनाथ (प्रथम), शन्तिनाथ (१६वें) पार्श्वनाथ २३वें एवं महावीर (२४वें) की ही मूर्तियां हैं। साथ ही ऋषभनाथ पुत्र बाहुबली गोमटेश्वर की मूर्तियां अन्यत्र भी विशेष लोकप्रिय थीं, एलोरा में उनकी सर्वाधिक मूर्तियां मिली हैं। कुछ जैन मन्दिरों की योजना मन्दिर–समूह के रूप में है। इन्द्रसभा प्रारूप की दृष्टि से कैलास मन्दिर की अनुकृति है। इसी कारण इसे छोटा कैलास भी कहते हैं, किन्तु रचना की दृष्टि से यह उस उत्कृष्टता को नहीं पहुँचती जो वास्तविक कैलास मन्दिर की थी। अतः साधन, सुविधा एवं समय के अनुसार इन्होंने कभी बौद्ध एवं कभी ब्राह्मण गुफाओं से प्रेरणा ली। इन जैन गुफाओं में भिक्षुगृहों की भी व्यवस्था नहीं है। जैन शासन देवताओं में कुबेर (या

सर्वानुभूति) यक्ष तथा चक्रेश्वरी, अम्बिका एवं सिद्धायिका यक्षियों की सर्वाधिक मूर्तियां हैं।

संख्या १३ से २६ तक की गुफाएं हैं। इनमें एलोरा की गुफा संख्या १४ का स्थानीय नाम रावण की खाई, गुफा संख्या १५ का दशावतार मन्दिर, गुफा संख्या १६ का कैलास मन्दिर, गुफा संख्या २१ का रामेश्वर मन्दिर, गुफा संख्या २२ का नीलकंठ, गुफा संख्या २४ का तेली की घाणी, गुफा संख्या २५ का कुम्भाखाड़ा, गुफा संख्या २६ का जनवास; गुफा संख्या २७ का ग्वालिन की गुफा (मिल्कमेड्स), गुफा संख्या २६ का डूमरलेण अथवा सीता की चावड़ी या नहानी है। एलोरा के प्रमुख ब्राह्मण मन्दिरों या मण्डपों में रावण की खाई, दशावतार, कैलास मन्दिर और सीता की नहानी विशेष उल्लेखनीय है। ब्राह्मण लयण गुफाओं में अधिकांश शैव सम्प्रदाय की है। इन्हें दो कालों में बॉटा जा सकता है। इनमें से प्रारम्भिक गुफाएँ पूर्ववर्ती काल की बौद्ध गुफाओं के आधार पर बनी है जिनमें कोई विग्रह या पूजा प्रतीक नहीं है।[१३] रावण की खाई और दशावतार मन्दिर कैलास मन्दिर से प्राचीन है। इदशावतार गुफा में दन्तिवर्मा का अभिलेख है। एलोरा की ब्राह्मण गुफाओं में शैव मूर्तियों के साथ ही शक्ति एवं अन्य देवी–देवताओं की भी अनेक मूर्तियां हैं।

<u>तिथिक्रम</u> :

एलोरा की गुफाओं की तिथि के सन्दर्भ में अब तक बहुत से कार्य हो चुके हैं। जेम्स बर्गेस और फर्ग्युसन ने एलोरा की बौद्ध गुफाओं का निर्माण काल ३५०–५५० ई० माना है। उनके अनुसार बौद्ध गुफाओं की खुदाई सातवीं शती ई० तक चलती रही। ब्राह्मण गुफाओं के बारे में इन विद्वानों का कथन है कि सातवीं शती ई० में मध्य में ब्राह्मण गुफाएँ बननी प्रारम्भ हुई। इन विद्वानों ने जैन गुफाओं का काल आठवीं से तेरहवीं शती ई० बताया है। टी०वी० पथी के अनुसार जैन गुफाओं का यह तिथिक्रम ठीक नहीं है।

पर्सी ब्राउन के अनुसार बौद्ध गुफाएँ ४५० ई० से ६५० ई० के मध्य की हैं। ब्राह्मण गुफाएँ सातवीं शती ई० में बननी शुरू हुईं और जैन गुफाएं आठवीं शती ई० में बननी प्रारम्भ हुई। जैन गुफाएं आठवीं और नवीं शताब्दियों की हैं। टी०वी०पथी के अनुसार जैन

गुफाओं का यह तिथिक्रम ठीक नहीं है, क्योंकि जैन गुफा में १३वीं शती ई० के लेख हैं जो जैन गुफाओं की अन्तिम तिथि तेरहवीं शती ई० तक ले जाते हैं।[१४]

एलोरा की प्रारम्भिक गुफाओं पर वाल्टर स्पिंक ने सर्वाधिक विस्तारपूर्वक कार्य किया है। उन्होंने बौद्ध गुफाओं की तिथि ४७५ से ५१० ई० के बीच मानी है। कुछ ब्राह्मण गुफाओं (संख्या १७, १६, २०, २१, २६, २७, २८, २६) को वाल्टर स्पिंक ने बौद्ध गुफाओं से पहले का भी माना है।[१५] हमने प्रस्तुत अध्ययन में वाल्टर स्पिंक के तिथिक्रम को स्वीकार किया है और उसके आधार पर ही एलोरा की प्रतिमाओं के विकास को निरूपित किया है। स्पिंक का प्रारम्भिक गुफाओं का तिथिक्रम इस प्रकार है —

गुफा संख्या	तिथि
एलोरा गुफा संख्या १,२	६१८–६४० ई०
एलोरा गुफा संख्या ३	६२५–६४३ ई०
एलोरा गुफा संख्या ४	६३०–६४५ ई०
एलोरा गुफा संख्या ५,६	६०६–६३० ई०
एलोरा गुफा संख्या ७,८	६२१–६४० ई०
एलोरा गुफा संख्या ६	६२३–६४३ ई०
एलोरा गुफा संख्या १०	६१६–६५० ई०
एलोरा गुफा संख्या ११	६३१–६५० ई०
एलोरा गुफा संख्या १२	६४०–६५० ई०
एलोरा गुफा संख्या १४	६०२–६२१ ई०
एलोरा गुफा संख्या १७	५७६–६०१ ई०
एलोरा गुफा संख्या १६	५५४–५६६ ई०
एलोरा गुफा संख्या २०	५५६–५७१ ई०
एलोरा गुफा संख्या २१	५५६–५६० ई०
एलोरा गुफा संख्या २६	५५४–५७६ ई०

एलोरा गुफा संख्या २७ (प्रारम्भिक चरण)	५५६–५८१ ई०
एलोरा गुफा संख्या २८	५५१–५६१ ई०
एलोरा गुफा संख्या २६	५५६–६०१ ई०[१६]

बाद की गुफाओं के तिथि–निर्धारण में हमने लेखों तथा अन्य विद्वानों द्वारा प्रमाणित कालक्रम को आधार बनाया है जो इस प्रकार है ––

गुफा संख्या	तिथि
एलोरा गुफा संख्या २२	सातवीं शती ई० का उत्तरार्द्ध एवं आठवीं शती ई० का प्रारम्भ
एलोरा गुफा संख्या १५	७५३–७५७ ई०
एलोरा गुफा संख्या १६	८वीं शती ई० का उत्तरार्द्ध

एलोरा की ब्राह्मण गुफाओं का तिथिक्रम इस प्रकार रहा है ––

गुफा संख्या	तिथि
गुफा संख्या २८	५५१–५६१ ई०
गुफा संख्या १	५३४–५६६ ई०
गुफा संख्या २०	५५६–५७१ ई०
गुफा संख्या २६	५५६–६०१ ई०
गुफा संख्या २१	५५६–५६० ई०
गुफा संख्या १८	५५६ ई०
गुफा संख्या १७	५७६–६०१ ई०
गुफा संख्या १४	६०२–६२१ ई०
गुफा संख्या २७	७वीं शती ई०
गुफा संख्या १५	७५३–७५७ ई०
गुफा संख्या २२	७वीं शती ई० का अन्त तथा ८वीं शती ई० का प्रारम्भ

गुफा संख्या २३	७वीं शती ई० का अन्त तथा ८वीं शती ई० का प्रारम्भ
गुफा संख्या २४	७वीं शती ई० का अन्त तथा ८वीं शती ई० का प्रारम्भ
गुफा संख्या २५	८वीं शती ई०
गुफा संख्या २६	८वीं शती ई०
गुफा संख्या १६	८वीं शती ई० का उत्तरार्द्ध

ब्राह्मण वास्तु एवं शिल्प :

छठीं शती ई० के अन्त और सातवीं शती ई० के आरम्भ में ब्राह्मण धर्मावलम्बियों ने एलोरा में गुफाओं के निर्माण में बौद्ध गुफाओं (मुख्यतः विहारों) का अनुकरण किया। राष्ट्रकूटों के शासन–काल में कुछ बौद्ध विहारों को भी ब्राह्मण गुफाओं में परिवर्तित किया गया।[१७] साथ ही विस्तृत पैमाने पर नवीन देवालयों का भी निर्माण किया गया। वास्तु–शैली की दृष्टि से एलोरा ब्राह्मण लयण–मन्दिरों की प्रेरणा के तीन प्रधान स्रोत थे––

१. एलोरा के बौद्ध लयण विहार।
२. बादामी के लयण मन्दिर।
३. अयहोलि एवं पट्टडकल के ब्राह्मण मन्दिर।

एलोरा में ब्राह्मण धर्म के अनुयायियों ने सजीव शिलाओं में ऐसे मन्दिर बनाए जो सम्पूर्ण विश्व में स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण हैं। उनके विशाल परिमाप, समृद्ध आलंकारिक विवरण एवं निर्दोष परिसज्जा सभी विस्मयकारी हैं। इस शिल्पकर्म की चरम परिणति कैलास मन्दिर (गुफा १६) में हुई।

एलोरा में अलग–अलग ब्राह्मण गुफाओं की सामान्य वास्तु विशेषताएं इस प्रकार रही हैं ––

गुफा–१३ :

यह एक छोटा और पूरी तरह से सादा कक्ष है। इसका प्रासाद नष्टप्राय है। वर्गेस का अनुमान है कि यह धर्मशाला अथवा अतिथिशाला थी। इस गुफा में वास्तु की दृष्टि से कुछ भी उल्लेखनीय नहीं है।[१८]

गुफा १४ (रावण की खाई) :

विन्यास में यह आयताकार है। यह सामने से पीछे तक ८५ फीट लम्बा है। इसमें सामने की ओर चार स्तम्भ है। भीतर १२ स्तम्भों पर टिका ५४ X ५५ १/२ फीट का मण्डप और उसके पीछे प्रदक्षिणापथयुक्त गर्भगृह है।[१९] स्तम्भों का अलंकरण औरंगाबाद और अजन्ता के परवर्ती बौद्ध लयणों के समान है। लयण की दीवारें मूर्तियों से अनुकृत हैं। यहां आन्तरिक मण्डपों का आरम्भ तो नहीं हुआ, किन्तु गर्भगृह की योजना मण्डप के भीतर ही है तथा चारों ओर प्रदक्षिणा पथ भी बने हुए हैं। रावण की खाई रचना की दृष्टि से औरंगाबाद के गुफाओं से काफी मेल खाती हैं। इसके मण्डप–द्वारा पर स्तम्भों की जगह दो लम्बे और ऊँचे द्वारपाल बनाये गये हैं।

इस गुफा में शैव, वैष्णव, गाणपत्य एवं शाक्त सम्प्रदायों के देवों की मूर्तियां विद्यमान हैं। इनमें रावणानुग्रह, शिव–पार्वती, अन्धकासुरवध, नटराज, नृवराह, लक्ष्मी और भूदेवी सहित विष्णु; सप्तमातृकाओं (गणेश सहित), महिषासुरमर्दिनी, दुर्गा, गजलक्ष्मी, गंगा और यमुना की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

गुफा १५ (दशावतार) :

सामने की ओर चट्टानों को काटकर इसे एक चौकोर आंगन का रूप दिया गया है। बीच में पत्थरों को काट कर चार स्तम्भों का मण्डप बनाया गया है जिसकी बाहरी दीवारों पर देवमूर्तन हुआ है। आँगन के पश्चिमी छोर की दीवार पर दो स्तम्भों पर टिकी रथिका है। आँगन के आगे मुख्य लयण है जो द्वितल और आँगन से कुछ ऊँचाई पर है। रूपयोजना में यह बौद्ध विहारों सरीखा ही है, किन्तु इसमें मण्डप के दोनों ओर कोठरियों

के स्थान पर देवमूर्तियों से युक्त रथिकायें हैं। यह मण्डप ६५६ फीट लम्बा और उसमें १४ सादे चौकोर स्तम्भ हैं।[२०] पीछे की दीवार में दोनो ओर दो–दो कोठरियाँ हैं। मण्डप के सामने के उत्तरी कोने में ऊपर जाने के लिए सीढ़ियां हैं। ६५ फीट १०५ फीट का ऊपरी तल ४४ स्तम्भों वाला मण्डप है जिसके पिछले भाग में प्रदक्षिणापथयुक्त गर्भगृह है। द्वार के समीप नन्दी–मण्डप बना है। दशावतार गुफा अपनी मूर्तिसज्जा के लिए विशेष प्रसिद्ध है। वास्तु–विन्यास की दृष्टि से यह बहुत सादा है किन्तु इसके अर्द्धस्तम्भ बहुत सुन्दर हैं। गुफा की भित्तिकाओं के समीप अनेक देव प्रकोष्ठ भी बने हुए हैं।

इस गुफा में ब्राह्मण धर्म के सभी सम्प्रदायों की मूर्तियां हैं। इनमें रावणानुग्रह, कालारि, त्रिपुरांतक, भैरव, नटराज, लिगोद्भव, शिव–पार्वती–परिणय, विष्णु, नृवराह, स्थौणनृसिंह, गोवर्धनधारी कृष्ण, शेषशायी विष्णु, गजेन्द्रमोक्ष, त्रिविक्रम, सूर्य, गणेश, गजलक्ष्मी, सरस्वती, महिषमर्दिनी दुर्गा, गंगा और यमुना की मूतियां उल्लेखनीय हैं।

<u>गुफा १६ (कैलास मन्दिर)</u>

यह गुफा एलोरा के लयण–वास्तु में हार के मध्य मणि के समान शोभित है। यह मन्दिर शैलवास्तु का अप्रतिम उदाहरण माना जाता है। पूरे पर्वत को काट कर इस भव्य मन्दिर का निर्माण किया गया है। पहाड़ को काट कर बनाये गये देवायतनों में यह मन्दिर सर्वाधिक विशाल तथा कलापूर्ण है। एलोरा के प्रवीण शिल्पियों ने बड़ी कुशलता से पर्वत को काटा। ऊँची चौकी पर यह मन्दिर आज भी अपने समग्र रूप में खड़ा है। इसके साथ दो ध्वज–स्तम्भों का निर्माण हुआ तथा बृहद् आकार वाली हस्तियों का चित्रण शैल पर किया गया।

पर्सी ब्राउन कैलास मन्दिर को द्रविड़ स्थापत्य शैली का एक विकसित रूप मानते हैं। यह मन्दिर तल योजना में गोपुर (महाद्वार), मण्डप, नन्दीमण्डप, मुखमण्डप, रंगमण्डप (नवरंग) तथा गर्भगृह एवं देव प्रकोष्ठ से युक्त है। इसके भीमकाय स्तम्भ, विस्तीर्ण प्रांगण, विशाल वीथियॉ तथा दालान, मूर्तिकारी से भरी छतें और देव, मानव और विविध जीव–जन्तुओं की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। यहाँ के शिल्पियों ने विशालकाय पहाड़ी के

विभिन्न भागों को तराश कर देव, मानव और पशु आकृतियों के अंग–प्रत्यंगों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण इतने अद्‌भुत कौशल से गढ़े हैं कि दर्शक आत्मविभोर होकर उन महान कलाकारों के सामने नतमस्तक हो जाता है।[२१]

कैलास को लयण–स्तापत्य के विकास का अन्तिम रूप लक्षित है जिसमें गुफा भावना का परित्याग कर निर्मित मन्दिरों का अनुकरण किया गया और शिखर से अधिष्ठान तक का सम्पूर्ण भाग पहाड़ी में काट कर बनाया गया है। वस्तुतः कैलास भारतीय वास्तुकला के इतिहास की वह कड़ी है जहाँ लयण एवं निर्मित वास्तु का अन्दर मिट जाता है। कैलास मन्दिर की रचना में राष्ट्रकूट कला और स्थापत्य का सर्वोत्कृष्ट उद्‌घाटन हुआ है। कर्कराज के बड़ौदा दानपत्र में इस मन्दिर को अद्‌भुत सन्निवेश कहा गया है।

पट्‌टडकल के विरूपाक्ष मन्दिर की संरचना से साम्य रखता हुआ भी आकार में कैलास मन्दिर विरूपाक्ष से दुगुना है। पहले एक शिलाक्षेत्र को कठिन श्रम द्वारा उत्कीर्ण कर मन्दिर के चारों तरफ का अवकाश निकाला गया। इस शिला क्षेत्र का मध्यवर्ती भाग छोड़ दिया गया जहाँ स्थापत्य की संरचना करनी थी। मध्यवर्ती शिलाखण्ड में ही वास्तु और शिल्पकर्म घटित हुआ है। शिल्पकर्म का समारम्भ ऊपर से नीचे की ओर किया गया और स्थापत्यकर्म के साथ ही साथ मूर्ति और अलंकरण कर्म भी सम्पादित किया जाता रहा। इस प्रकार स्तूपों से लेकर मन्दिर के संधार या लगती तक की निर्माण–प्रक्रिया की पूरी रेख शिल्पी ने पहले ही तैयार कर ली थी और फिर उस योजना को यथाक्रम उसने शिल्पान्वित किया।

मंदिर का प्रांगण ३००' x २००' विस्तृत है। मन्दिर में प्रवेश के लिए द्वितल गोपुरम् बना है। प्रांगण के दोनों ओर प्रकोष्ठयुक्त दीर्घाएँ हैं जो प्रदक्षिणापथ का काम देती है। मन्दिर का मुख्य भाग विमान और मण्डप से संयुक्त है। विमान और मण्डप का क्षेत्र १५०' x १००' विस्तृत है। विमान और मण्डप २५' ऊँचे अधिष्ठान पर स्थित है और इसे भूमितल भी कहा जा सकता है। यह ऊँचा अधिष्ठान हस्ति और सिंह पंक्तियों से इस प्रकार

अलंकृत और रचित है मानो इन्हीं के ऊपर देव विमान और मण्डप आधारित है। अधिष्ठान के पश्चिम तरफ के सोपान से विमान तक पहुँचा जाता है। मण्डप की छत सपाट और यह छत चार–चार स्तम्भ समूहों की रचना से कुल सोलह स्तम्भों पर आधारित है। द्वितल मण्डप और विमान को एक अन्तराल संयुक्त करता है। विमान स्तूपिकायुक्त चतुष्तलीय है। प्रांगण से विमान के शिखर भाग की ऊँचाई ६५' है। विमान के तीन ओर प्रदक्षिणापथ है जिसमें पाँच विशाल देव प्रकोष्ठ बने हैं। मण्डप के सम्मुख भाग में एक विस्तृत नन्दीमण्डप भी है जिसके दोनों ओर ५०' ऊँचे दो ध्वजस्तम्भ बने हैं। इन ध्वजस्तम्भों के शीर्ष भाग पर त्रिशूल बना है। कैलास मन्दिर जहाँ भूमि–यासेजना की दृष्टि से नागर शैली के अनेक तत्वों से युक्त है, वहीं इसके शिखर तथा विमान का निर्माण पूरी तरह दक्षिणा पथ (द्रविड़) शैली का अनुगमन करता है।

मन्दिर का प्रत्येक भाग ब्राह्मण गाथाओं से जटित है। मन्दिर में प्रवेश के पूर्व बाहर की ओर गंगा, यमुना और सरस्वती की मूर्तियाँ गम्भीर अर्धसूचक है।ये मूर्तियाँ क्रमशः पवित्रता, भक्ति और ज्ञान को अभिव्यक्त करती हैं जिनका समन्वय ही वास्तविक ज्ञान या आत्मज्ञान है। इसी प्रकार बाहर की ओर काम और रति का अंकन भी संभवतः इस बात का संकेत है कि इन पर नियंत्रण के बाद ही मन्दिर में प्रवेश सम्भव है। साथ ही ये मूतियाँ शिव के काम पर पूर्ण नियंत्रण (कामान्तक) की भी सूचक है। यद्यपि इस गुफा में ब्राह्मण धर्म के सभी प्रमुख देवों की मूर्तियाँ हैं, किन्तु उनमें शिव के संहारक या उग्र स्वरूप की मूर्तियों की प्रधानता है। इन मूर्तियों में रावणानुग्रह, त्रिपुरान्तक अन्धकासुर, भैरव कालारि, कल्याण सुन्दर, नटराज, लिंगोद्भव, गंगावतरण, नृवराह, त्रिविक्रम, स्थौण नृसिंह, बलराम, मातृकाएं, महिषमर्दिनी, सूर्य, गणेश की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं। रामायण, महाभारत और कृष्ण लीला के दृश्य भी उत्कीर्ण हैं।

<u>गुफा १७</u> :

यह एक छोटा और सहन (यार्ड) तथा प्रवेश द्वार से युक्त शैव लयण मन्दिर है। रामेश्वर एवं रावण की खाईं की भाँति इसमें भी गर्भगृह के चतुर्दिक् प्रदक्षिणापथ है।

इसकी शाला की गहराई ७६ फुट है जिसके आगे अर्द्धमण्डप है जो दो बृहत् स्तम्भों पर खड़ा है।

इस गुफा में केवल वैष्णव, गाणपत्य तथा शाक्त सम्प्रदायों की ही मूर्तियाँ हैं। इनमें केवल विष्णु, गणेश, महिषमर्दिनी तथा ब्रह्मा की ही मूर्तियाँ हैं। इस गुफा में शिव की एक भी मूर्ति का न होना भी उल्लेखनीय है।

गुफा १८ :

यह गुफा ६७ फुट लम्बी तथा ५५ फुट चौड़ी है। शाला में चार अधूरे स्तम्भ और दोनों ओर अन्तरित मण्डप–सदृश दो गहरे गोखल हैं। शाला के बाद ३० फुट लम्बा और १०$^{१}/_{२}$ फुट चौड़ा अन्तराल है जो दो स्तम्भों और दो कोष्ठ स्तम्भों पर स्थित है। अन्तराल की दीवारों पर प्राचीन चित्र एवं अभिलेख के चिह्न है। गर्भगृह में शिव लिंग है। सामने नन्दी की मूर्ति के स्थान पर एक चौकोर अग्निकुण्ड है।

गुफा १६ :

गुफा १६ भग्नप्राय है। इसकी छत पूर्णतः गिर चुकी है और अधिकांश स्तम्भ भी नष्ट हो चुके हैं। शाला के बीच दोनों ओर दो गहरे गोखल हैं और उसके सम्मुख चार–चार स्तम्भों की पंक्तियाँ हैं। इसके बाद गर्भगृह है जिसमें शिवलिंग प्रतिष्ठित है। यहाँ प्रदक्षिणापथ की योजना नहीं है।

गुफा २० :

यह एक छोटा सा शिवालय है (५३' X ३०') जिसके चारों ओर प्रदक्षिणा और सामने दो स्तम्भ एवं दो कोष्ठस्तम्भ है। भित्ति पर उत्तर की ओर गणपति, दक्षिण की ओर महिषासुरमर्दिनी एवं पूरब की ओर कुबेर की मूर्तियाँ हैं।

गुफा २१ (रामेश्वर) :

रामेश्वर लयण (मन्दिर) दशावतार मन्दिर से कुछ भिन्न है। वस्तुतः मन्दिर शैली के लयण वास्तु का आरम्भ रामेश्वर लयण से ही माना जाना चाहिए। इसमें सुविस्तृत प्रांगण

बना हुआ है और इसका मण्डप भी विशाल है। मण्डप के पिछले भाग के दोनों किनारों पर नन्दीपीठ है। मण्डप के पीछे प्रदक्षिणापथयुक्त गर्भगृह है। प्रवेशद्वार अलंकृत है। यहीं से राष्ट्रकूट शैली के स्तम्भों की रचना का प्रारम्भ समझना चाहिए। ये स्तम्भ स्थूल होते हुए भी आकर्षक और अलंकृत है। स्तम्भ का निचला भाग चौकोर, मध्य भाग अठकोण तथा ऊपर का भाग वर्तुल और सबसे ऊँचा भाग आमलकयुक्त है। वस्तुतः आमलक की रचना में ही राष्ट्रकूट स्तम्भों का सौन्दर्य देखने को मिलता है। कुछ स्तम्भों को समानान्तर और घुमावदार तरंग रेखाकर्म द्वारा और भी आकर्षक बनाया गया है। कुछ स्तम्भों के ऊपर कोष्ठक की जगह वृक्षिकाएँ बनी हैं। रामेश्वर लयण का मण्डप ६६ फीट लम्बा और २५ फीट चौड़ा तथा १५$^{१}/_{२}$ फीट ऊँचा है। उसके दोनों किनारों की दीवारों में मूर्तियुक्त विशाल रथिकाएँ हैं। मण्डप के पीछे प्रदक्षिणापथयुक्त गर्भगृह है जिसका प्रवेशद्वार विस्तृत रूप से अलंकृत है। अलंकृत द्वार के दोनों ओर विशाल द्वारपाल हैं। यह समूचा लयण मूर्तियों से अलंकृत है अलंकृत उसके विशाल स्तम्भों के तोरणों का भव्य मूर्तन हुआ है। स्तम्भों के शीर्ष और भी आकर्षक तथा जटिल हैं तथा इसमें छत को सहारा देने के लिए मनुष्य की आकृतियों को भी जोड़ दिया गया है। मनुष्य की आकृतियों में अधिकतर नारी आकृतियाँ हैं मतथा उनके साथ आम के पेड़ भी बनाये गये हैं जो कि प्रजनन के प्रतीक हैं। नारी तथा आम के पेड़ को सर्वप्रथम साँची के तोरणों में बनाया गया था। कहीं–कहीं गंगा और यमुना की आकृतियाँ भी ब्रैकेट में आ जाती हैं।

इस गुफा में केवल शैव एवं शक्त सम्प्रदायों के देवों की ही मूर्तियाँ हैं। प्रमुख मूर्तियों में रावणानुग्रह, नटराज, कल्याणसुन्दर, मातृकाएँ, महिषमर्दिनी, दुर्गा, गंगा और यमुना की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

<u>गुफा २२ (नीलकण्ठ)</u> :

शैव मन्दिर होने के कारण रामेश्वर और रावण की खाई की भाँति यहाँ भी आँगन में ऊँचे अधिष्ठान पर नन्दीमण्डप है। यह मण्डप चार द्वारों वाला है। प्रांगण के दक्षिण भाग में एक छोटा आयतन है जिसमें सप्तमातृकाएँ उत्कीर्ण हैं। मन्दिर का मण्डप ऊँचे

अधिष्ठान पर बना है जिसकी लम्बाई ७० फुट, चौड़ाई ४४ फुट एवं ऊँचाई १२ फुट है।[२२] सभी स्तम्भ सादे, चौकोर एवं ब्रैकेटयुक्त हैं। अन्तराल की दीवारें मूर्तियों से अलंकृत हैं। गर्भगृह में ओपदार शिवलिंग है।

इस गुफा में गाणपत्य एवं शाक्त सम्प्रदायों के देवों की ही मूर्तियाँ विद्यमान हैं जिनमें गणेश, पार्वती, सरस्वती और गजलक्ष्मी की मूर्तियां उल्लेखनीय हैं।

गुफा २३ :

शिल्प एवं स्थापत्य कला की दृष्टि से यह गुफा उल्लेखनीय नहीं है। इस गुफा में केवल महेशमूर्ति ही उत्कीर्ण है।

गुफा २४ (तेली की धाणी) :

नीलकण्ठ गुफा के नीचे छोटे–छोटे पाँच आयतन हैं जिन्हें तेली का धण कहते हैं।[२३] वास्तु की दृष्टि से ये बिल्कुल सादे हैं। यहाँ पर गणेश और शिव की दो मूर्तियाँ भी हैं।

गुफा २५ (कुंभारवाडा) :

इसमें प्रदक्षिणापथ की कोई व्यवस्था नहीं है। इसकी शाला ६५ फुट गहरी, २७ फुट चौड़ी और १३ फुट १० इंच चौड़ी ऊँची है।[२४] इसके पीछे मुखमण्डप है जो आगे की शाला से छोटा है। इसकी गहराई ५७ फुट एवं चौड़ाई २३ फुट है। इस प्रकार की दो शालाओं की योजना हम एलोरा के बौद्ध विहारों में भी देख सकते हैं। इस शाला से होकर अन्तराल है जिसके आगे दो स्तम्भ हैं। अन्तराल की छत मेकं सप्तअश्वों के रथ पर आरूढ़ सूर्य की मूर्ति और गर्भगृह में एक वेदी है जिसके आधार पर इसके सौर मन्दिर रहे होने का अनुमान किया गया है।

इस गुफा में केवल सूर्य और कुबेर की मूर्तियाँ हैं।

गुफा २६ (जनवासा) :

इस शैव मन्दिर की शाला के दोनों किनारों पर कुछ अधिष्ठान पर एक–एक

आयतन बना है। ६$^{१}/_{२}$ फुट चौड़ी विशाल प्रदक्षिणापथ समेत शाला ११२ फुट गहरी तथा ६७ फुट चौड़ी है।[२५] अन्तराल के सामने के कोष्ठस्तम्भों में चाँवर–धारिणियाँ और गर्भगृह में शिवलिंग है। इस गुफा की योजना पूर्णतः रामेश्वर के समान है।

गुफा २७ (क्वालिन की गुफा) :

यहाँ आगे बरामदे की भी योजना है और बरामदे के दोनों ओर दीवार में नृवराह, हरिहरपितामह, एकांशा, महिषमर्दिनी आदि की मूर्तियाँ हैं।

गुफा २८ :

जलप्रपात के किनारे यह एक छोटी–सी गुफा है। वास्तुकला की दृष्टि से महत्वपूर्ण न होने पर भी मूर्तिकला एवं नैसर्गिक शाभा की दृष्टि से रमणीय है।

इस गुफा में केवल महालक्ष्मी की ही मूर्ति है।

गुफा २९ (डूमरलेण अथवा सीता की चावड़ी या नहानी) :

ब्राह्मण गुफाओं में यह अन्तिम उदाहरण है। कैलास मन्दिर के बाद एलोरा की ब्राह्मण गुफाओं में यह सर्वश्रेष्ठ है। इसमें तीन ओर आँगन निकाल कर प्रवेश के लिए तीन द्वार बनाये गये हैं। मुख्य द्वार के पीछे गर्भगृह है और प्रांगण के दोनो ओर अनेक देवप्रकोष्ठ बने हैं। प्रांगण के पीछे आयताकार मण्डप के पिछले भाग के मध्यवर्ती स्तम्भों को जोड़ कर गर्भगृह की रचना की गई है। गर्भगृह में भी चार द्वार हैं। मन्दिर के स्तम्भों की रचना बड़े चौकोर आसन पर की गई है और इन्हें गोलाकार बनाया गया है। इसके स्तम्भ–निर्माण की शैली एलिफेण्टा से मिलती–जुलती है, प्रदक्षिणापथ में निर्मित रथिकाओं के भीतर शिव की विभिन्न लीलाओं की मूर्तियाँ हैं।

यह तीन ओर से आँगनों से घिरा १४६ फीट लम्बा, १४८ फीट चौड़ा और १७ फीट ८ इंच ऊँचा मण्डप है।[२६] सामने के आँगन में चन्द्रशिलायुक्त सीढ़ियों के ऊपर इसका निर्माण हुआ है। सामने अगल–बगल अर्द्धस्तम्भ और बीच में दो स्तम्भ है। बीच के इस दोनों स्तम्भों की सीध में मण्डप के अन्तिम छोर तक सात–सात स्तम्भों की पाँत है जो

मण्डप को आयताकार रूप प्रदान करती है। अन्तिम छोर के दोनो ओर के पाँचवें और छठे स्तम्भों का स्थान गर्भगृह ने ले लिया है। इस गर्भगृह के चारों ओर चार द्वार हैं। इस आयताकार मण्डप के दोनो ओर दो–दो छोटे मण्डप हैं जो मिल कर सम्पूर्ण मण्डप को क्रास का रूप प्रदान करते हैं। बगल का पहला मण्डप पहले और छठे स्तम्भ की सीध में भीतर की ओर दो स्तम्भों और अर्द्धस्तम्भों पर बना छोटा मण्डप है। इस छोटे मण्डप के बीच में बगल के आँगनों में जाने का द्वार है। इस लयण के स्तम्भ काफी विशाल हैं। वे चौकोर आसन पर स्थित गोल और कटावदार हैं और उनका शीर्ष कटावदार गद्दों का बना है।

इस गुफा में शैव, वैष्णव एवं शक्त सम्प्रदायों के देवों की कई मूर्तियाँ हैं। इनमें रावणानुग्रह, नटराज, लकुलीश, शिव–पार्वती–परिणय, दुर्गा, सरस्वती, विष्णु और यमुना की मूर्तियाँ उल्लेखनीय हैं।

<u>मूर्तिकला</u> :

एलोरा की मूर्तियों में पूर्ववर्ती चालुक्य एवं पल्लव शैली काप्रभाव मिलता है। यहाँ की प्रारम्भिक मूर्तियाँ चालुक्य प्रभाव में बनी। यहाँ की आकृतियाँ बलिष्ठ और अतिकाय है, फिर भी आंगिक विन्यास में सन्तुलन बनाये रखने की कोशिश की गयी है। कुछ रूक्ष मूर्तियों को छोड़ कर अन्य में शारीरिक विन्यास की दृष्टि से पूर्णता और उसके आंगिक भराव में निहित शक्ति और ऊर्जा को अभिव्यक्त करने की चेष्टा की गयी है। प्रायः आकृतियाँ अपनी शारीरिक स्थिति के कारण स्वतंत्र दिखती हैं किन्तु कहीं–कहीं स्थान के अभाव में स्थापत्यगत स्थिति अथवा घटनाक्रम में पात्रों की स्थिति के कारण आकृतियाँ वास्तुगत स्थिति में समाहित अथवा एक सीमित ढ़ाँचे में निबद्ध सी भी लगती है। आगे चल कर स्वतंत्र राष्ट्रकूट–शैली के अन्तर्गत अत्यन्त विशाल आकार वाली मूर्तियाँ बनीं। इनमें भावपक्ष की प्रधानता, अलंकरण तथा प्रतिमालाक्षणिक विशेषताओ की प्रगुखता थी। मांसल मूर्तियाँ सन्तुलित शारीरिक गठन वाली तथा आध्यात्मिक शक्ति को विभिन्न भावों से व्यक्त करने वाली है। रूप और भाव का समन्वित भाव जो गुप्तकाल की मूर्तियों में

प्रारम्भ हुआ, उसका निर्वाह एलोरा की कतिपय मूर्तियों में भी किया गया है। पल्लव शैली की छाप रामेश्वर की गुफा की गंगा की मूर्ति पर प्राप्त होती है। दीर्घ, सुडौल, शरीर, उस पर केश–विन्यास की शोभा, तिरछे कटि प्रदेश में समाते से दीर्घपात, सूक्ष्मकटि और लयात्मक पार्श्वरेखा एवं सुकुमार शरीर की सुनियोजित योजना सब मिला कर अलौकिक दैवीय सौन्दर्य की सृष्टि करती है।[२७] दक्षिण में राष्ट्रकूट, चालुक्य एवं पल्लवों की कला पूर्ण पल्लवित थी और उत्तर में गुप्तकालीन कला की स्वर्णिम रश्मियाँ समस्त दिशाओं में प्रकीर्ण होकर वहाँ की कला को आलोकित कर रही थीं। उत्तर और दक्षिण, दोनों के मिश्रण से उद्‌भूत चालुक्य, राष्ट्रकूट कला में एक अलौकिक सौन्दर्य का समन्वय था जो एलोरा और एलिफेण्टा में मूर्त हो उठा।[२८] पारम्परिक मूर्ति शैली गुप्त कला से होकर चालुक्य और पल्लव मूर्ति शैली में जितना नहीं निखर सकीं, उससे कहीं अधिक राष्ट्रकूट मूर्ति शैली में निखरी।

एलोरा की ब्राह्मणधर्मीय मूर्तियों में अत्यधिक शक्ति एवं असीमित स्फूर्ति है। आकृतियों में देवता मानव की अपेक्षा अलौकिक अधिक लगते हैं और इस विशेषता को उनके सिर एवं हांथों की संख्या को बढ़ा कर भी प्रकट किया गया है। दशावतार मन्दिर के ऊपरी प्रांगण में उत्तर की ओर द्वार के निकट सबसे पहली मूर्ति भैरव की है। यह मूर्ति अत्यन्त निर्भीकता एवं शक्ति से उत्कीर्ण है। विशाल आकार की यह प्रतिमा अत्यन्त भयोत्पादक ढंग से आगे बढ़ती हुई प्रतीत होती है। भैरव के हाथों में गज चर्म है तथा उनकी मुण्डमाला जाँघों तक लम्बी है, उनके चारों ओर सर्प लिपटा हुआ है, खुले हुए मुख में उनके बड़े दाँत दिखाई पड़ते हैं, उन्होंने त्रिशूल से एक असुर को बींध दिया है। नीचे कंकाल–स्वरूपा भयंकरदर्शना रौद्रकाली की प्रतिमा है जिससे समस्त निरूपण की वीभत्सता और बढ़ जाती है। उसका मुख खुला हुआ है, बाल बिखरे हुए हैं तथा आँखों की पुतलियाँ धँसी हुई हैं।

दशावतार एवं कैलास मन्दिरों की वैष्णव मूर्तिकला में भी वही निष्ठुर एवं दानविक भाव है जो शैव मूर्तिकला में दृष्टिगोचर होते हैं। उदाहरणार्थ, वैष्णव मूर्तियों के लोकप्रिय विषयों में विष्णु द्वारा तीन महान पग लेकर अपने शत्रु बलि को पाताल भेजना अथवा

नृसिंह–अवतार वाराहावतार के रूप में असुर को कुचलना एवं पृथ्वी को नाश से बचाना सम्मिलित है।[२६]

शिल्प–परम्परा की अनुभूति और कर्मकौशल देवाधिदेव शिव की ऊर्जा और शिवत्व भाव की अभिव्यक्ति में पूरी तरह सक्षम रहे हैं। शिव को तीनों शक्तियाँ सृष्टि, स्थिति, संहार एलोरा की मूर्तियों में पूरी शक्ति और सुचारूता के साथ अभिव्यक्त हैं। शिव का उपर्युक्त तीनों भावात्मक परिवेश में जितना अच्छा अंकन एलोरा के शिल्प में हुआ है, उतना अन्यत्र नहीं मिलता है।

सन्दर्भ संकेत

अध्याय द्वितीय

१. माथुर, विजयेन्द्र कुमार, ऐतिहासिक स्थानावली, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, १९६९, पृष्ठ ८१.

२. याजदानी, जी. दकन का प्राचीन इतिहास, दिल्ली, पृष्ठ ६९३.

३. इसे विश्वकर्मा या सुतार की झोपड़ी भी कहते हैं।

४. श्रीनिवासन, के०आर०, टेम्पल ऑफ साउथ इण्डिया, "अर्ली रॉक आर्किटेक्चर", नई दिल्ली, १९७१, पृष्ठ ३१.

५. भट्टाचार्य, बी०, दी इण्डियन बुद्धिस्ट आइकोनोग्राफी, कलकत्ता, पृष्ठ ३९.

६. याजदानी, जी०, दकन का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ ६६८–६६१.

७. याजदानी, जी०, दकन का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ ६६८.

८. माथुर, विजयेन्द्र कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ८१

९. एलोरा गुफाओं के परिचय सूचना–पट्ट से उद्धृत

१०. कुमारस्वामी, ए०के०, हिस्ट्री ऑफ इण्डियन ऐण्ड इण्डोनेशियन आर्ट, न्यूयार्क, १९२६, पृष्ठ १००

११. एलोरा गुफाओं के परिचय सूचना पट्ट से उद्धृत

१२. श्रीनिवास, के०आर०, पूर्वनिर्दिष्ट, "लेटर राक आर्किटेक्चर", पृष्ठ ७४

१३. पथी, टी०वी०, एलोरा आर्ट एण्ड कल्चर, न्यू देलही, १९८०, पृष्ठ ५२–५५

१४. गुप्ते, आर०एस०, एण्ड महाजन, बी०डी०, अजन्ता एलोरा ऐण्ड आरंगाबाद केव्स, बाम्बे, १९६२, पृष्ठ १४७

१५. पथी, टी०वी०, एलोरा आर्ट ऐण्ड कल्चर, "दी इवाल्यूशन ऑफ आर्किटेक्चर ऐण्ड स्कल्पचर", न्यू देलही, १९८०, पृष्ठ ५२–५५

१६. स्पिंक, एम० वाल्टर, "अजन्ता टू एलोरा" मार्ग, खण्ड २०, अंक २, मार्च १९६७, पृष्ठ ५–६

१७. याजदानी, जी०, दकन का प्राचीन इतिहास, पृष्ठ ७९९

१८. फर्ग्युसन जेम्स ऐण्ड बर्गेस जेम्स, दी केव टेम्पल ऑफ इण्डिया, दिल्ली (पुनर्मुद्रित), १९६९, पृष्ठ ४३१.

१९. फर्ग्युसन जेम्स एण्ड बर्गेस जेम्स, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४३२

२०. फर्ग्युसन जेम्स एण्ड बर्गेस जेम्स, पृष्ठ ४३५

२१. माथुर, विजयेन्द्र कुमार, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ८२

२२. फर्ग्युसन जेम्स एण्ड बर्गेस जेम्स, पुर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४३६.

२३. उपर्युक्त, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४४३

२४. उपर्युक्त, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४४४

२५. उपर्युक्त, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४४४

२६. उपर्युक्त, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ४४४

२७. गुप्ते, आर०एस०, एण्ड महाजन, बी०डी० पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ २१६ का फलक

२८. अय्यर, राजगोपाल, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ६

२९. याजदानी, जी०, दकन का प्राचीन इतिहास, पूर्वनिर्दिष्ट, पृष्ठ ७२१